साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 48, नवम्बर(प्रथम) , 2018

लौट आओ दीपशिखा

(धारावाहिक उपन्यास)

लेखिका-

संतोष श्रीवास्तव

....गतांक से आगे

“क्या लेंगी..... ठंड बहुत ज़्यादा है थोड़ी ब्राँडी और स्टार्टर में चिकन लॉलीपॉप|”

ब्राँडी की एक छोटी बॉटल तो सुलोचना ने भी उसके बैग में रखी थी कि ठंड ज़्यादा हो तो थोड़ी सी पी लेना, गर्मी रहेगी|

“क्या सोच रही हैं? कम ऑन..... यहाँ का वैदर रात को बर्फीला हो जाता है| खुदकी सुरक्षा के लिए ब्राँडी दवा जैसी है|”

तब तक बैरा ऑर्डर की गई सामग्री रख गया था| नीलकांत के आत्मीय व्यवहार से दीपशिखा खुलती गई| इस बेहतरीन वक़्त के लिए वह किसे शुक्रिया कहे? ईश्वर को या नीलकांत को?

होटललौटतेहुए उसे बदन में गरमाहट महसूस हो रही थी| ब्रांडीवाक़ई अच्छी थी|नीलकांत उसे कमरे तक छोड़ने आया..... “कल पैंगोग लेक के किनारे कुछ शॉट्स लेने हैं..... “आप चलेंगी तो मुझे खुशी होगी|”

“सुबह बताऊँगी|”

“मैं इंतज़ार करूँगा, गुडनाइट|”

नीलकांत के विदा होते ही उसने दरवाज़े को अच्छी तरह बंद किया और चेंज करके गर्म बिस्तर में घुस गई| सोचाथा तुरंत सो जाएगी पर मुकेश उसे हांट करता रहा| सोचते-सोचते आधी रात हो गई तब कहीं जाकर नींद आई|

लॉनके फूलों भरे पौधे धूप में नहा रहे थे| इंटरकॉम पर नीलकांत था- “गुडमॉर्निंग..... चल रही हैं?”

“ओ.के. ..... कितनी देर में निकलेंगे| अभी तो मैं सोकर उठी हूँ|”

“एक घंटे बाद?” नीलकांत की आवाज़ की मिश्री कानों से होठों तक लरज गई|

“ओ.के.” रिसीवर रखते ही क़दमों में फुर्ती आ गई| ब्रश करते करते उसनेचाय का ऑर्डर दिया|आज वह पीली ड्रेस पहनेगी| देखती है इन हसीन वादियों में वह पीले रंग के साथ कितना कॉंप्रोमाइज़ कर पाती है| आज का पूरा दिन नीलकांत के साथ गुज़रेगा| क्या वे लम्हे उसे कचोटेंगे जो पीले रंग के साथ अनायास जुड़े हैं? क्या धोखे की यादों से ठसाठस भरे दिल को पैंगोंग झील के किनारे उलीच पाएगी? शायद हाँ..... हाँ, वह कोशिश करेगी|

इत्तिफ़ाक़| नीलकांत ने भी नीलीजींस पर पीली टी शर्ट पहनी थी| उसे देखते ही मुस्कुराया- “व्हाट ए कोइंसिडेंट|”

अबउसे पीले रंग के साथ संघर्ष करना है| यानि कि जो सामने मौजूद है..... सहज है..... उसके लिए संघर्ष| आज वह कैनवास भी नहीं लाई| स्केच बुक और पेंसिल लाई है..... आजउसे खुद को सीप में पिरोना है तभी तो मुक्ता रूप पकेगा|

मनाली चायना बॉर्डर रोड पर नीलकांत की टीम का काफ़िला चल पड़ा|

“नामग्यालजी..... थोड़ा बताते चलिए, हमारेलिये तो यह जगह अननोन है|”

आशुतोष ने ड्राइवर से कहा तो वह अपने पीले दाँतों को निपोर कर मुस्कुराया-“जी शाब|”

“आपको पता है दीपशिखा जी, आज हम समुद्र सतह से १७५८६ फीट की ऊँचाई तय करने वाले हैं| वहाँ से १३९०० फीट पर है पैंगोग झील|”

“जी..... और वह १३४ कि.मी. एरिया में फैली है| १०० कि.मी. चायना में और ३४ कि.मी. भारत में|”

“अरेवाह! यानी कि आप सही मायने में टूरिस्ट हैं|” वह मुस्कुराई..... नीलकांत भी|

“शाबजी, आज ड्राई डे है|” नामग्याल ने जानकारी दी|

“यानी कि आज लेह वासी शराब नहीं पिएँगे? मगर क्यों?”

“नहींशाब जी..... वो वाला ड्राई डे नहीं| आज के दिन यानी हर सोमवार कोबी आर ओ के आदमी पत्थरों को डायनामाइट लगाकर तोड़ते हैं इसलिए गाड़ियों की आवाजाही रोक दी जाती हैं|”

“यारतुमहिन्दीअच्छी बोल लेते हो|”

नामग्यालगद्गद् हो गया|

चाँगथाँग वैली में झील के ऊपर कुछ काली पूँछ वाले परिंदे उड़ रहे थे| काली गर्दन वाले सारस भी थे|लद्दाख़ में इन्हें समृद्धि का प्रतीक माना जाता है और इसीलिए बौद्ध मठों की दीवारों पर इन्हें उकेरा जाता है| दीपशिखा ने चलती कार में ही इस दृश्य का स्केच बना लिया| नीलकांत उसे मुग्ध आँखों से निहारता रहा|चढ़ाईपर हवा का दबाव काफ़ी कम था| बर्फ़ानी विरल हवा में साँस भरना मुश्किल हो गया| सुलोचना ने कपूर उसके पर्स में रखते हुए कहा था- “चढ़ाई पर इसकी ज़रुरत पड़ेगी| सूँघती रहना| यह एक अच्छा ऑक्सीजनवाहक है|”

उसने पर्स में से कपूर की एक टिकिया नीलकांत को दी, दूसरी खुद सूँघने लगी| साँसें नॉर्मल हो गईं|

“कपूर मेरे पास भी है| हमें तो रात दिन की भागदौड़ यह सब सिखा देती है पर आप?”

“कुछखबरें तो हम भी रखते हैं|” दीपशिखा अब नीलकांत के संग सहज हो रही थी|

लम्बेरोमाँचक सफ़र के बाद पैंगोग झील सामने थी| मोरपंखी रंगों वाली झील..... दीपशिखा ने कार से उतरते ही दूरबीन आँखों से सटा ली| नीला, हरा, बैंगनी, पीला, गाढ़ा नीला..... इतनेरंगों का पानी..... आश्चर्य?पीछे पर्वतों का सौंदर्य अद्भुत था| दो तीन रंग के पर्वत झील को अपनी गोद में समेटे थे| दूर चुशूल था..... वह लैंड जिसके इस पार भारत और उस पार चीन है| सर्दियों मेंझील जम जाती है| पाँच फीट तक की गहराई में पानी ठोसबर्फ़ बन जाता है| तब उस पर फौजी गाड़ियाँ चलती हैं जो सीमा पर सैनिक शिविर में सामान पहुँचाती हैं| इतने ठंडे, सुनसान इलाके में सैनिक देश की रक्षा के लिए डटे रहते हैं|”

फिल्म के शॉट्स रेडी थे| धूप में चौकोर बोर्ड सरीखे कैमरे चौंधियाई रोशनी में पलकें बंद कर लेने को मजबूर कर रहे थे| हीरो हीरोइन पर एक गाना फिल्माया गया| गाने के तीन अंतरे में से एक ही अंतरा शूट हो पाया कि लंच टाइम हो गया| सबके लिए पैक्ड लंच था| वह नीलकांत और हीरो हीरोइन के साथ बैठकर लंच लेने लगी| सैनिकों ने उनके लिए टैंट की व्यवस्था कर दी थी और पूरी टीम के लिए फौजकी तरफ़ से कॉफ़ी बन रही थी|

“बोर तो नहीं हो रही हैं दीपशिखा जी?” नीलकांत के सवाल पर दीपशिखा ने चौंकते हुए कहा- “क्याss इतने खूबसूरत इलाके में कोई बोर हो सकता है भला|”

“नहीं, मैं शूटिंग में बिज़ी हूँ और आप अकेली, इसलिए पूछा|”

“चित्रकार को अकेलापन वरदान लगता है| काशमैं कैनवास ले आती तो बात ही और थी|”

“अरे, लेआतीं न|”

वह कॉफ़ी की चुस्कियाँ भरती रही|

आधे घंटे बाद शूटिंग फिर शुरू हो गई| वह अपनी स्केच बुक को लेकर रंग बिरंगे पर्वतों और झील के सौंदर्य में डूबगई|

सूर्यास्त के पहले नीचे उतर जाना है| नामग्याल जल्दी मचा रहा था| बहरहाल पैकअप करते करते धूप ढलने लगी थी|

डिनर के लिए फिर नीलकांत का ऑफर..... दीपशिखा क्यों इतनी मजबूर थी उसके सामने कि उसके हर प्रस्ताव पर रज़ामंदी की मोहर लगा देती| कहीं उसके चोट खाए दिल पर नीलकांत मलहम बनकर तो नहीं आ गया था?

हफ़्ते भर के लिए आई थी दीपशिखा लेकिन नीलकांत के साथ दस दिन कहाँ चले गये पता ही नहीं चला| हर बार शूटिंग में दीपशिखा नीलकांत के संग होती, जब लौटती तो स्केच बुक चित्रों से भरी होती| प्रकृति को उसने बहुत नज़दीक से महसूस किया यहाँ| रंग-बिरंगे पर्वतों के ईश्वर द्वारा बनाए लैंडस्केप को उतनी ही खूबसूरती से उतारना..... बर्फ़ की कठोरता के संग कोमलता भी महसूस करना..... अद्भुत दरख़्तों से बतियाना..... बौद्ध मठों में लामाओं का कठोर जीवन..... बौद्ध धर्मावलम्बियों की बौद्ध धर्म में इतनी आस्था है कि वे दस वर्ष की उम्रमें ही अपने पुत्र को मठ को सौंप देते हैं|उन्हें पता है कि उसका बचपन छिन रहा है और वह सांसारिक सुखों से वंचित किया जा रहा है| अब उसे सारा जीवन वरिष्ठ लामा की देखभाल में बिताना‌है और बौद्ध भिक्षु बनना है जिसमें कहीं भी उसकी मर्ज़ी को स्थान नहीं है|बौद्धधर्मावलम्बीनिर्वाण धम्मचक्र घुमाते हैं और यह मान लेते हैं कि उन्हेंजीवन मरण के चक्र से मुक्ति मिल गई|अगर सभी ऐसा मान लें तो एक दिन तो यह संसार मनुष्यविहीन होजाएगा| तब क्याहोगा? घबरा गई दीपशिखा|

एयरपोर्ट पर नीलकांत की टीम का वह भी एक हिस्सा बनकर जब हवाई जहाज में बैठी तो अपने बाजू वाली सीट पर नीलकांत को ही पाया|नीलकांतअपना कार्ड उसे दे रहा था- "पहुँचकरशायद वक़्त न मिले| हमें कार्गोबेल्ट में सामान के लिए काफ़ी देर रुकना पड़ता है| बॉम्बे पहुँचकर संपर्क में ज़रूर रहना| मेरेलिये ये दस दिन बहुत कीमती थे|"

"जी....."

"ऑफ़कोर्स..... फिल्म की शूटिंग पूरी हो जाना एक वजह थी और एक वजह आप| इस चंद्रप्रदेश में मैं ऐसे चाँद की उम्मीद से तो नहीं आया था न|"

कहते हुए उसने लाड़ से देखा उसे| वह भीतर ही भीतर पिघलने लगी|

पीपलवाली कोठी के अपने कमरे में जब वह तरोताज़ा होकर सुलोचना के हाथ के बने गर्मागर्म भजिए खा रही थी तो सुलोचना ने उसके चहरे को ग़ौर से देखा, अब वहाँ पहले वाली उदासी-अवसाद न था बल्कि एक चमक थी जो अक़्सर पतझड़ के बाद बहार आने पर पेड़ों के पत्तों में होती है| नई कोंपलों पर जब धूप की किरनें पड़ती हैं तो पूरा जंगल चमक उठता है| सुलोचना जाने को मुड़ीं..... कहीं उनकी ही नज़र न लग जाए उनकी बिटिया पर-

"बैठो न माँ..... इतने दिनों बाद लौटी हूँ मैं| वहाँ की बातें तो रात को सोते समय बताऊँगी| अभी चित्र तो देख लो| फ्रांस में एग्ज़िवीशन की पूरी तैयारी कर ली है मैंने|"

सुलोचनादीपशिखा के पंखों का वजन तौलने लगीं|सोचने लगीं जब ये पेट में थी तो वे किन ख़यालों में डूबी रहती थीं..... चित्रकार के तो नहीं ही|

नीलकांतमुम्बई पहुँच चुका था क्योंकि सुबह-सुबह उसी का फोन था- "कैसी हैं दीपशिखा जी?"

"जी, आप कैसे हैं?"

"एकदम रिलैक्स मूड में| अगले महीने शूटिंग के लिए पेरिस जाना है| वहीं के लिए ऊर्जा जुटा रहा हूँ|"

"क्याऽऽ पेरिस!! आप पेरिस जा रहे हैं?"

"हाँऽऽ..... उसमें इतना आश्चर्य क्यों? फिल्म के अंतिम शॉट्स वहीं के तो लेने हैं|"

"ओह..... अगले महीने शायद मैं भी पेरिस....."

"क्याऽऽ फिर वही इत्तिफ़ाक़..... भई वाह, कमाल हो गया|"

"जी हाँ नीलकांत जी| हमारा ग्रुप तो कब से पेरिस में एग्ज़ीवीशन प्लान किये हुए है| मैं कल ही मुम्बई लौट कर इसे अंतिम रूप दूँगी और वीज़ा के लिए एप्लाई करूँगी|"

"इस जद्दोजहद में मत पड़िए| आपकी पूरी टीम को वीज़ा दिलाने का ज़िम्मा मेरा| आप मुम्बई आईये फिर मिलते हैं|"

एक सनसनी सी फैल गई दीपशिखा के तनबदन में| उसका ख़्वाब इतनी जल्दी साकार होगा सोचा न था उसने| वह खुशी में भरकर सुलोचना से लिपट गई- "माँ, फ्रांस में एग्ज़ीवीशनका पक्का हो गया| मुझे कल ही मुम्बई लौटना होगा|"

सुलोचना के चेहरे पर बनावटी गुस्सा था- "यह क्या दीपू, अभी आई, अभी चल दीं|"

"माँ, इस वक़्त मत रोको मुझे..... अगर मौक़ा हाथ से गया तो क्या पता दोबारा चांस न मिले| माँ प्लीज़|"

क्रमश:.....

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें